

अंकुरीकरण →

अंकुरण बीजों में होता है। बीज, सुरक्षित खाद्य सामग्रियों का भण्डार हैं। इसमें जीवित पौधे का सूक्ष्म रूप भ्रूण होता है। भ्रूण एक सम्पूर्ण पौधा होता है। जिसकी वृद्धि निषेचन बीज से होती है। जब बीज अनुकूल वातावरण में रखा जाता है। तो इसके विभिन्न ऊतक पानी को सोखकर फूल जाता है। इस अवस्था में ऑक्सीजन (O_2) और कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2) बीज में आसानी से प्रवेश कर सकते हैं। बीज का बाह्य भाग फूल जाता है। और बीजांकुर (Seedling) बाहर निकल जाता है। इस प्रकार यह विधि जिसमें बीज से बीजांकुर फूल निकलता है।

अंकुरण के लिए आवश्यक स्थितियाँ →

किसी भी बीज का अंकुरण कुछ विशेष परिस्थितियों में ही सम्भावना होता है। अंकुरण के लिए पर्याप्त नमी व आर्द्रता तथा ऑक्सीजन और उचित तापमान होना चाहिए।

1. **ऑक्सीजन** → प्रत्येक बीज के अंकुरण के लिए विशेष माता में ऑक्सीजन द्वारा प्रोब्य पदार्थों का अपचयन होता है।

जिससे श्वसन के लिए आवश्यक ताप और ऊर्जा प्राप्त होता है। बीजों में उपस्थित ऑक्सिजन - वाहक अपनी साधारण क्रियाशीलता को बनाये रखने के लिए O_2 की आवश्यकता होती है।

नमी व आर्द्रता →

सामान्यतः बीजों में 7% से 10% तक नमी व आर्द्रता होती है। यह आर्द्रता बीजों में अंकुरण के लिए बहुत कम होती है। इस कारण बीजों में नमी की मात्रा अधिक पहुंचाना अंकुरण की प्राथमिक आवश्यकता है।

33) तापमान →

अधिकांश अनाजों व दालों के अंकुरण के लिए अनुकूलतम तापमान $60^\circ F$ से तक है। कुछ बीज ऐसे होते हैं जो एक निश्चित तापमान पर पूर्ण रूप से अंकुरित नहीं होते इस प्रकार के बीजों के लिए तापमान में परिवर्तन करते रहना आवश्यक होता है। बीजों को कम तापमान पर रखने से बीजांकुरण शीघ्र होता है तथा अच्छी तरह से विकसित होता है।

34/